अध्याय तृतीय

अध्याय-तृतीय

शोध विधि

किसी भी अनुसंधान के लिये एक शोध विधि होती है जिसमें हम शोध प्रश्नो के उत्तर प्राप्त करते हैं। इस प्रकार यह एक व्यापक कार्य योजना है, जिसका अंतिम उद्देश्य अनुसंधानकर्ता को शोध प्रश्न (समस्या) का ऐसा उत्तर (हल) प्रदान करना है, जो यथा संभववैध, वस्तुनिष्ठ, परिदृश्य और किफायती हो।

इसमें निम्न बिन्दुओं का स्पष्ट उल्लेख होता है-

1. स्वतंत्र एवं आश्रित पर।
2. उस प्रतिदर्श की प्रकृति एवं आकार जिस पर अध्ययन करना है।
3. आंकड़ों को इकट्ठा करने उनके विश्लेषण तथा प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या करने की नीति।
4. अनुसंधान के मध्य आने वाली कठिनाईयों से निपटने की विधियां ।

3.1 प्रतिदर्श

अनुसंधान का अंतिम लक्ष्य ऐसे सिद्धांत या सामान्यीकरणो का विकास करना है जो किसी व्यक्तियो, घटनाओ या वस्तुओ के समूह पर लागू होती है, परन्तु ऐसे सिद्धांत के विकास के लिये समूह प्रत्येक सदस्य का अध्ययन करना संभव नहीं होता है, विशेषकर उस स्थिति में जब समूह के सदस्यो की संख्या बहुत अधिक हो। सामान्यतः उस समूह पर जहां अनुसंधान परिणामो का सामान्यीकरण करना होता है। उसके कुछ सदस्यो को लेकर उन पर अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श चयन सोद्देश्य विधि से किया है, इसके अंतर्गत मध्य प्रदेश के पांच जिलो भोपाल, सीहोर, जबलपुर, बालाघाट, सिवनी (केवलारी) के पांच जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के 05 प्राचार्य, 20 प्रशिक्षकों तथा 50 प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

तालिका–1
प्रतिदर्श की स्थिति

क्र.	प्रशिक्षण संस्थानों के नाम	प्रशिक्षण संस्थानों के मुख्य स्त्रोत	मुख्य स्त्रोतों की संख्या
1	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर	प्राचार्यो कि संख्या	5
2	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान भोपाल	प्रशिक्षकों कि संख्या	20
3	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान सीहोर	प्रशिक्षणार्थियों कि संख्या	50
4	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बालाघाट		
5	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान सिवनी		

3.2 उपकरण

शिक्षा सहित व्यवहारगत लगभग सभी अनुसंधानों में कुछ मापन उपकरणों का उपयोग किया जाता है। इसमें से कुछ पहले से बने बनाये होते है तथा कुछ का निर्माण शोधकर्ता को स्वयं करना होता है। इस प्रकार बनी बनाई या स्वयंकृत मापन उपकरणों द्वारा शोधकर्ता स्वतंत्र या आश्रित चरो का मापन करता है। यह मापन शोध प्रक्रिया द्वारा वस्तुनिष्ठ परिणाम प्रदान कर सके, इसके लिये आवश्यक है, कि यह मापन उपकरण स्वयं में विश्वसनीय और वैद्य हो। इस शोध में शोधकर्ता द्वारा प्रश्नावली उपकरण को लिया गया है।

प्रश्नावली एक योजना होती है जिसमें किसी मनोवैज्ञानिक सामाजिक, शैक्षिक आदि विषयो पर प्रश्नो की श्रृंखलाओं को किसी व्यक्ति या समूह को भेजा जाता है जिससे जाँच की समस्या के संबंध में आंकड़े प्राप्त हो सके।

प्रश्नावली का निर्माण जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की निर्देशिका (डाइट गाइड लाइन) 1989 तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) 2005 के मुख्य तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

- प्रश्नावली के प्रथम भाग में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण की प्रवेश प्रक्रिया व विषयो का अध्ययन शामिल किया गया है।
- प्रश्नावली के द्वितीय भाग में प्राथमिक शिक्षक, प्रशिक्षण कार्यक्रमो की स्थिति को जानने की कोशिश की गई है।
- प्रश्नावली के तृतीय भाग में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण की मूल्यांकन स्थिति को जानना चाहा है।

3.3 जाँच परीक्षण

उपरोक्त घटकों को ध्यान में रखकर लगभग 20 प्रश्नों का निर्माण कर परीक्षण का ब्लू प्रिंट तैयार किया गया। इस परीक्षण को विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य, प्रशिक्षक व प्रशिक्षणार्थियो पर प्रशासित किया गया तथा और प्राप्त परिणामो के आधार पर विश्लेषण किया गया।

3.4 प्रदत्तो को संकलन

परीक्षण को पूर्ण रूप से तैयार करने के पश्चात प्रदत्तो का संकलन किया गया । प्रदत्तो के संकलन हेतु शोधकर्ता ने व्यक्तिगत संपर्क द्वारा प्रयास किया। इस संदर्भ में सिवनी व जबलपुर और भोपाल में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रश्नावली स्वयं जाकर भरवाई गयी तथा सीहोर व बालाघाट जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्राचार्यो प्रशिक्षको व प्रशिक्षणार्थियो से अन्य स्त्रोतो के माध्यम से प्रश्नावाली भरवायी गयी।